**पाठ - 22**

# तात्या टोपे

भारत में सन् 1857 की ऐतिहासिक क्रांति को प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के रूप में जाना जाता है। इस संग्राम में कुछ वीरों की भूमिका अत्यधिक महत्त्वपूर्ण व अग्रणी रही, जिन्होंने शक्तिशाली ब्रिटिश शासन की नींव को हिलाकर रख दिया। जब स्वतंत्रता संघर्ष के अधिकांश वीर एक-एक करके अंग्रेजों की सैनिक शक्ति से पराभूत हो गए तो वे अकेले ही क्रांति की पताका फहराते रहे। ये थे महान सेनानायक तात्या टोपे।

तात्या का जन्म महाराष्ट्र में नासिक के निकट पटौदा जिले के येवाले नामक गाँव में सन् 1814 में हुआ था। इनका वास्तविक नाम 'रामचन्द्र पाण्डुरंग येवालकर' था। इनके पिता बाजीराव पेशवा के गृह

प्रबन्ध विभाग के प्रधान थे। बाजीराव सन् 1818 में बसाई के युद्ध में अंग्रेजों से हार गए। उन्हें पूना छोड़ना पड़ा। इस कारण तात्या के पिता भी पेशवा के साथ पूना से कानपुर के पास बिठूर आ गए। यहीं पर बचपन में तात्या पेशवा के पुत्र नाना साहब, लक्ष्मीबाई (मनु) आदि के साथ युद्ध के खेल खेला करते थे। वह आजीवन अविवाहित रहे। 1851 में पेशवा की मृत्यु के पश्चात् नाना साहब बिठूर के राजा हुए।

जब पेशवा बाजीराव बिठूर आए तो संधि के अनुसार उन्हें अंग्रेजों से पेंशन मिलती थी। उनकी मृत्यु के पश्चात् यह पेंशन बंद कर दी गई। इससे नाना साहब बाहर से तो सहज थे लेकिन आंतरिक रूप से क्षुब्ध थे। 29 मार्च, 1857 को बैरकपुर, बंगाल में मंगल पांडे के विद्रोह के बाद जब यह ज्वाला कानपुर पहुँची तो कानपुर उत्तरी भारत के सबसे बड़े विद्रोह केंद्रों में से एक हो गया। कानपुर के पास ही नाना और उनके साथ तात्या रहते थे जिनके साथ अंग्रेजों ने पेंशन व पेशवा का पद छीनकर बड़ा ही अभद्र व्यवहार किया था। ये उपयुक्त अवसर की तलाश में थे।

तात्या को पहली बार एक सेनानायक के रूप में अपनी सैनिक योग्यता के प्रदर्शन का मौका वर्ष 1857 में मिला, जब उन्होंने 6 जून, 1857 को कानपुर छावनी में अंग्रेजों के लिए बने एक कच्चे दुर्ग को घेर लिया। यहाँ सैकड़ों की संख्या में अंग्रेज मौजूद थे। तात्या ने 12 जून को सीधा आक्रमण किया। इस युद्ध में तात्या की विजय हुई और अंग्रेज सैन्य अधिकारी व्हीलर को आत्मसमर्पण करना पड़ा।

अब तात्या कानपुर की रक्षा के लिए अपनी फौजों को व्यवस्थित करने में लग गए। तभी हैवलाक की अगुवाई में अंग्रेजी सेना ने जुलाई 1857 के द्वितीय सप्ताह में कानपुर पर धावा बोल दिया। दोनों पक्षों में भीषण युद्ध हुआ, लेकिन अंततः विजयश्री अंग्रेजों को मिली। इस पराजय के बाद नाना ने अपने पूर्व  सेनाध्यक्ष को हटाकर तात्या को अपना सेनाध्यक्ष बनाया और उन्हें विद्रोह की पताका फहराते रहने का आदेश दिया। अब पूरा नेतृत्व तात्या के हाथों में आ गया। वह अपनी कुशलता व बहादुरी के बल पर इस स्वाधीनता संघर्ष में सबसे लंबी अवधि अर्थात 17 जुलाई,1857 से 8 अप्रैल,1859 तक डटे रहे।

कानपुर पर पुनः कब्जा करने में सफलता न मिल पाने के कारण तात्या ने एक किले की आवश्यकता को महसूस करते हुए कालपी के दुर्ग पर तत्काल अधिकार कर लिया। नवम्बर 1857 के अंत में एक बार पुनः तात्या ने ग्वालियर सैन्य दल एवं अन्य सैनिकों के सहयोग से अंग्रेज सेनानायक विंढम की फौज को हराकर कानपुर पर अधिकार कर लिया, किंतु यह विजय बहुत ही अल्पकालिक रही। कैम्पबेल के तीव्र आक्रमण से कानपुर पर पुनः अंग्रेजों का अधिकार हो गया। शीघ्र ही ह्यूरोज ने एक बड़ी सेना के साथ कालपी दुर्ग पर भी अधिकार कर लिया और तात्या को वहाँ से हटना पड़ा।

मार्च 1857 में अंग्रेजी सेना से झाँसी की रानी का प्रचंड युद्ध चल रहा था, तब तात्या 20,000 सैनिकों की विशाल फौज के साथ उनकी सहायता के लिए झाँसी के निकट आ चुके थे लेकिन तभी सूचना पाकर ह्यूरोज अपनी विशाल सेना के साथ वहाँ आ धमका और उन्हें वहीं रोक दिया। परिणामस्वरूप तात्या और ह्यूरोज की सेना के बीच 4 अप्रैल, 1857 को बेतवा का भयंकर युद्ध लड़ा गया। इस युद्ध में अंग्रेजों के अच्छे तोपखाने के कारण तात्या की सेना को पीछे हटना पड़ा।

इसके बाद तात्या 22 जून,1858 से लेकर 7 अप्रैल,1859 को पकड़े जाने तक अपने चतुर्दिक अंग्रेजी फौजों के साथ गोरिल्ला युद्ध करते रहे। इस कारण से उन्हें विश्व के सर्वश्रेष्ठ गोरिल्ला युद्ध के सेनानायक के रूप में प्रसिद्धि मिली। उन्होंने लगातार 8 महीनों तक पीछा करने वाली अंग्रेजी फौजों को छकाए रखा, तब अप्रैल 1859 के अंत तक

स्वतंत्रता संघर्ष के वीरों में से एक मात्र बचे अंतिम और सर्वश्रेष्ठ वीर तात्या को पकड़ने के लिए अंग्रेजों ने विश्वासघात का सहारा लिया। अंततः 7 अप्रैल को अंग्रेज सैनिक अधिकारी मीड ने तात्या के सहयोगी मानसिंह पर दबाव बनाकर उसकी सहायता से तात्या को धोखे से गिरफ्तार कर लिया। कड़ी यातनाओं के बीच 14 अप्रैल, 1859 को सिपरी के दुर्ग के पास परेड मैदान में उन्हें फाँसी दे दी गई।

तात्या केवल चंबल, नर्मदा और ताप्ती की घाटियों में ही नहीं, अपितु हिमालय से लेकर कन्याकुमारी तक और राजस्थान से बंगाल तक सारे देश के लोगों के हृदय में विद्यमान हैं। उन्होंने एक ऐसा युद्ध लड़ा जो विजय और पराजय की सीमा से परे था, किंतु उन्होंने अपने देश एवं राष्ट्र की महान परंपराओं के अनुरूप युद्ध किया। उनका नाम सदैव एक राष्ट्रीय वीर के रूप में सम्मानपूर्वक लिया जाता रहेगा।

## अभ्यास

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

1. तात्या टोपे का जन्म कब और कहाँ हुआ था ?

2. 'तात्या टोपे एक योग्य सेनानायक थे।' संक्षेप में लिखिए।

3. नाना साहब ने तात्या को अपना सेनाध्यक्ष क्यों बनाया ?

4. झाँसी की रानी की सहायता के लिए उनके करीब पहुँचकर भी तात्या को वहाँ से क्यों हटना पड़ा ?

5. ''तात्या टोपे गोरिल्ला युद्ध में विश्व स्तर के सेनानायक थे।'' इसके पक्ष में अपने विचार लिखिए।